लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2 संख्या: 2 ; जनवरी-जून, 2021

आपको पूर्वोत्तर भारत की यात्रा क्यों करनी चाहिए ?

✍ निक्की कलिता

असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम - सात बहनें और एक भाई के इसी समुच्चय का नाम ही है पूर्वोत्तर भारत। इसके प्रत्येक राज्य का अपना अनुपम इतिहास और अपनी अनूठी संस्कृति है। एक यात्री के लिए यह क्षेत्र दुर्लभ अनुभवों का भंडार है। यह आश्चर्यचकित कर देने वाली बात है कि पूर्वोत्तर के बाहर के कई भारतीय इसके बारे में बहुत कम जानते हैं। यदि आपने पूरे भारत की यात्रा की है, लेकिन आप पूर्वोत्तर में कभी नहीं आए हैं, तो आपके लिए यहाँ आने के कई कारण हैं। आपको एक बार पूर्वोत्तर भारत की यात्रा तो अवश्य करनी चाहिए। यहाँ मैं कुछ कारण चिह्नित कर रही हूँ -

पर्यावरण के अनुकूल स्थल

एक जागरूक यात्री के लिए पूर्वोत्तर भारत पर्यावरण-अनुकूल कई महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है। नागालैंड में खोनोमा ऐसा ही एक स्थान है, जहाँ बाहरी लोगों द्वारा अनियंत्रित वनों की कटाई को रोकने के लिए ग्रामीण लोगों ने एक साथ अपनी आवाज़ बुलंद की थी। उसी प्रकार मेघालय के मौलिन्नोंग को एशिया के सबसे स्वच्छ गाँव के सम्मान से नवाजा गया है। वहाँ के सभी घर बाँस द्वारा निर्मित हैं। सभी घरों का सौन्दर्य देखते ही बनता है। अरुणाचल प्रदेश में ज़ीरो घाटी की आपातानी जनजाति ने खेती के अपने अनूठे टिकाऊ (सस्टिनेबल) तरीके विकसित किए हैं। फिर, सिक्किम में लुभावनी खंगचेंडज़ोंगा राष्ट्रीय उद्यान है, जो बहुत ही खूबसूरत है। यदि आप हरे-भरे वातावरण की यात्रा में विश्वास रखते हैं, तो यह एक बेहद ही ख़ास स्थान है। प्रकृति-प्रेमियों को तो यहाँ अवश्य आना चाहिए।

सिक्किम, भारत का पहला और एकमात्र जैविक (ऑर्गेनिक) राज्य

सन् 2004 की बात है जब सिक्किम पूरी तरह से जैविक राज्य बनने की यात्रा पर था। आखिरकार 12 साल बाद वह इस महत्वाकांक्षी उपलब्धि को हासिल करने में कामयाब हुआ। भारत का सबसे कम आबादी वाला और दूसरा सबसे छोटा राज्य सिक्किम भारत के मुकुट में चमकने वाला हीरा बन गया है। सिक्किम में ऐसे कई गाँव हैं जहाँ यात्रियों को स्थानीय लोगों के साथ रहने के दौरान हाथों से जैविक खेती करना

सिखाया जाता है। लाचुंग, लाचेन, डेन्चुंग और कलुक कुछ ऐसे लोकप्रिय गाँव हैं जहाँ आप जा सकते हैं।

असम के लुप्तप्राय एक सींग वाले गैंडे के दर्शन

सन् 1975 तक एक सींग वाले गैंडे लगभग विलुप्ति के रास्ते पर थे, जिनमें से केवल 600 नेपाल और भारत के जंगलों में बचे हुए थे। शिकार कर उनके सींगों का अवैध व्यापार इस गिरावट का मुख्य कारण था। मार्च 2015 में आयोजित जनगणना के अनुसार, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में वर्तमान लगभग 2,401 गैंडे हैं। लेकिन समर्पित प्रयासों के साथ, इस लुप्तप्राय प्रजाति की आबादी में अब वृद्धि हुई है। विश्व के एक सींग वाले गैंडे आधे से अधिक असम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में रहते हैं। इस राष्ट्रीय उद्यान में दुनिया के अन्य स्थानों की तुलना में बाघों का घनत्व भी सबसे अधिक है। जब आप यहाँ आएँ तो एक सफारी-टूर ज़रूर करें। यहाँ हाथियों, जंगली पानी में रहने वाले भैंसों, दलदली हिरणों और पक्षियों की एक विस्तृत विविधता के दर्शन होते हैं। यहाँ आकर आप स्वयं ही काजीरंगा नेशनल पार्क में वन्य जीव-जन्तुओं के संरक्षण की दिशा में लिए गए महत्वपूर्ण प्रयासों से रूबरू हो सकेंगे।

यादगार सड़क-यात्राएँ

भारत के इस क्षेत्र में शानदार सड़क-यात्रा के लिए कुछ ख़ूबसूरत मार्ग भी हैं। घुमावदार सड़कें, जो अक्सर कई जगहों पर उबड़-खाबड़ होती हैं, किसी भी ड्राइवर के लिए चुनौती खड़ी कर सकती हैं। लेकिन यहाँ सब साहसी होते हैं। रास्ते में, आप अक्सर पुराने जंगलों, 'रोलिंग' पहाड़ियों, राष्ट्रीय उद्यानों, नदियों के किनारे, चाय के बागानों, तेजस्वी झरनों और ऐसे कई प्राकृतिक भव्य-स्थलों को देख सकते हैं। पूर्वोत्तर भारत का अनुभव करने के लिए सड़क-यात्रा करना वास्तव में सर्वोत्तम तरीकों में से एक माना जाता है। युवाओं को बाइक-यात्रा द्वारा यहाँ आना खूब पसन्द है।

आध्यात्मिक जागृति

असम समेत पूर्वोत्तर के अन्य सभी राज्यों में आध्यात्मिक साधना के अनेकानेक स्थल मन्दिर, मठ, सत्र, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारे आदि के रूप में परिव्याप्त हैं। असम के बहुप्रसिद्ध कामाख्या मन्दिर, वशिष्ठाश्रम, उमानन्द, हयग्रीव माधव, दौलगोविंद मन्दिर, पोवामक्का, बरदोवा सत्र आदि ऐसे अनेक आध्यात्मिक स्थलों में उल्लेखनीय हैं। अरुणाचल प्रदेश भारत की पूर्वी सीमा में आने वाला राज्य है। इसीलिए इसे 'उगते सूरज की भूमि' की आख्या दी गयी है। इस राज्य के निराले प्राकृतिक परिदृश्य कई अर्ध-बौद्ध मठों से युक्त हैं। उन सभी में सबसे महत्वपूर्ण तवांग मठ है, जिसकी स्थापना सन् 1680 में हुई थी। यह भारत का सबसे बड़ा मठ भी है। जब आप तवांग आने के बारे में सोचें तो, धर्म कॉफी हाउस और लाइब्रेरी में कुछ यादगार पल अवश्य बिताएँ। अरुणाचल प्रदेश में उर्गेलिंग मठ भी है, जो छठे दलाई लामा का जन्मस्थान है। ये सभी मठ आध्यात्मिक आत्मनिरीक्षण के लिए एक आदर्श वातावरण प्रदान करते हैं। बर्फ से ढके पहाड़ों का मनोरम दृश्य एक अतिरिक्त 'लक्ज़री' है। पर्यटकों को विपुल वैभव सौन्दर्य एवं आध्यात्मिक ऊर्जा से परिपूर्ण

पूर्वोत्तर भारत की यात्रा का आनन्द अवश्य उठाना चाहिए।

चुनौती-भरे ट्रैकिंग-मार्ग

साहसी व्यक्तियों के लिए पूर्वोत्तर भारत शानदार विचारों के साथ-साथ कुछ चुनौतीपूर्ण ट्रैकिंग-मार्ग भी प्रस्तुत करता है। अरुणाचल प्रदेश में बेली ट्रेल ट्रेक भारत, तिब्बत और म्यांमार को जोड़ने वाले प्राचीन व्यापार-मार्ग का अनुसरण करता है। पश्चिम सिक्किम में गोइचेला ट्रेक नेपाल के प्रसिद्ध ट्रेकिंग-मार्गों में अद्वितीय स्थान रखता है। ज़ुकोऊ वेली (Dzukou Valley), बेमुल ऑफ पेमाको, ग्रीन लेक, रीइक माउंटेन और उनाकोटि कुछ अन्य ट्रेक हैं जिन्हें आप इस क्षेत्र में देख सकते हैं।

उदार संस्कृति

पूर्वोत्तर भारत के इन राज्यों की संस्कृति यहाँ बसे विविध जातीय समूहों की विशेषताओं से युक्त है। प्रत्येक जाति-जनजाति की अपनी-अपनी अलग प्रथा, पर्व-त्यौहार, नानाविध व्यंजन, रीति-नीति, गीत-नृत्य, पोशाक और बोलियाँ हैं। असम का 'बिहु' उत्सव असमीया जनजीवन की बहुरंगी संस्कृति का परिचायक है। पूर्वोत्तर भारत के नागालैंड राज्य के नागा समुदाय की एक प्रमुख जनजाति है- कोनयाक, जिसकी आबादी धीरे-धीरे कम हो रही है। कोनयाक कभी अपने दुश्मनों का सफाया करने के लिए प्रसिद्ध थे और गर्व से उन्हें गाँव लौटने पर प्रदर्शित करते थे। समय के साथ-साथ ये पुराने रिवाज विलुप्त हो रहे हैं। लेकिन कोनयाक हमें सिखाते हैं कि पूर्वोत्तर भारत की रहस्यमय पहाड़ियों में सांस्कृतिक अनुभवों का खजाना छिपा हुआ है।

संगीत की प्रेरणा पाएं

भारत का यह पूर्वोत्तर क्षेत्र कुछेक सर्वश्रेष्ठ संगीतकारों की आवास-भूमि है। भारत-रत्न 'सुधाकंठ' डॉ॰ भूपेन हाजरिका, जयंत हाजरिका, केशव महन्त, दीपाली बरठाकुर, सुदक्षिणा शर्मा, जुबीन गर्ग, पापोन प्रभृति पुराने एवं नवीन दौर के ऐसे अनगिनत संगीत-सितारों से असम दीप्तिमान है। हालांकि, कुछेक गायक ऐसे भी हैं जो प्रतिभासम्पन्न हैं पर बड़े फलक पर कम चर्चित हैं। भारतीय क्लासिकल संगीत के अतिरिक्त पश्चिमी संगीत का क्षेत्र भी यहाँ के अधिकांश लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है। मेघालय की राजधानी शिलांग को भारत के 'रॉक संगीत की राजधानी' के रूप में जाना जाता है। पौराणिक संगीतकार लो माजाव मेघालय राज्य से हैं, इसीलिए 'सोलमेट' भारत के सर्वश्रेष्ठ 'ब्लूज़ बैंड' में से एक है। यदि आप पूर्वोत्तर भारत के शानदार रॉक संगीत का आनन्द उठाना चाहते हैं, तो अरुणाचल प्रदेश में 'ज़ीरो फेस्टिवल ऑफ म्यूजिक' में भाग लेना सुनिश्चित करें, जो देश में एक अत्यधिक मांग वाला संगीत है।

पूर्वोत्तर भारत की यात्रा के लिए सबसे उत्तम समय

पूर्वोत्तर भारत के लगभग सभी राज्य ऐसे हैं जिनका वर्ष के किसी भी समय दौरा किया जा सकता है। पूर्वोत्तर भारत की जलवायु कभी हल्के और कभी भारी बारिश का सुखद समन्वय है। हालांकि, यहाँ का

दौरा करने का सबसे अच्छा समय सितंबर-अक्टूबर से मार्च तक का महीना माना जाता है। उस समय इस क्षेत्र में हरेपन की स्वच्छ चादर बिछ जाती है। निश्चित रूप से भारतभूमि का पूर्वोत्तर क्षेत्र पर्यटकों के लिए असीम संभावनाओं एवं अनगिनत यादगार स्मृतियों का अक्षय-भण्डार है।

संपर्क-सूत्र :
विभाग-प्रधान, हिंदी विभाग
डॉन बोस्को विद्यालय, गुवाहाटी
ई-मेइल: nikeekalita2015@rediffmail.com